निगादितम्

निबन्ध संग्रह

टी.आर. त्रिपाठी "रूद्र"

कवि परिचय

तिलकराम त्रिपाठी छद्म नाम देवर्षिनारद, काकभुषुण्डि

प्रचलित नाम : टीकाराम त्रिपाठी उपाख्य रूद्र त्रिपाठी
पितृ नाम : पं. जगन्नाथ प्रसाद त्रिपाठी, शास्त्री ज्योतिर्विद
मातृनाम : श्रीमती वीणादेवी त्रिपाठी
पितामह नाम : स्व. पं. दशरथ प्रसाद त्रिपाठी, पुरोहित
जन्मस्थली : ग्राम बहरोल, थाना बहरोल, तह. बण्डा बेलई जिला सागर (म.प्र.)
जन्मोपरान्त : 58/25 रामपुरा वार्ड सागर
जन्मतिथि : सं 2014 आश्विन कृष्ण अमावाश्या, दिनांक 01.07.1957
पत्नी : सौ. वनिता शुक्ल, गोपालगंज सागर
शिक्षा दीक्षा : प्राथमिक शाला रामपुरा सागर से पॉचवीं उत्तीर्ण, बाल्यकाल में पिता के सम्मुख पाणिनीय लघु सिद्धान्त–कौमुदी, पंचसंधि प्रकरण तथा सत्यनारायण कथा के पॉचों अध्याय संस्कृत में कण्ठस्थ। पं मोतीलाल नेहरू उ.मा. विद्यालय सागर में कक्षा 6 से 11 तक गणित विज्ञान संकाय से वरेण्य शिक्षक पं श्री उमाशंकर चौबे एवं श्री रमाकान्त मिश्रा के सान्निध्य में अध्ययन। शालेय सांस्कृतिक मंत्री रहे । शालेय एवं अंतर्शालेय स्तर पर वाद विवाद, अत्याक्षरी, भाषण, निबन्ध आदि अनेकानेक प्रतियोगिताओं के प्रमाण पत्र, प्रशस्ति– पत्र ।

नगर के श्रेष्ठ विद्वान स्व. पं राधेलालजी शिलाकारी 'वैदिक' द्वारा सन् 1974 में उपनयन संस्कार द्वारा दीक्षित/ सागर वि.वि. से पं हीरालाल दुबे ज्योतिषी के सान्निध्य में बी.ए. हिन्दी, संस्कृत शिक्षाशास्त्र एंव सामान्य अंग्रेजी से किया। व्याकरणाचार्य पं जीवनलाल जी अग्निहोत्री से कनकधारा स्तोत्र सीखा। शासकीय बुनियादी प्रशिक्षण संस्था सागर से 1976–77 में बी.टी.सी प्रशिक्षण और शासकीय शिक्षण सेवारंभ।

भारतीय विद्या भवन बंबई से संस्कृत साहित्य में उत्तरमध्यमा/ श्री गीता रामायण परीक्षा समिति ऋषिकेश पौढ़ी–गढ़वाल (उ.प्र) की संपूर्ण मानस परीक्षाएँ उत्तीर्ण रामायण विशारद/ हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आयुर्वेद–रत्न की उपाधि/ सागर विश्वविद्यालय से विधि स्नातक एल–एल.बी की उपाधि/ तदुपरान्त हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि/ अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि/ बी.एड. उपाधि, संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि एम.एड. की उपाधि सम्प्रति शासकीय उत्कृष्ट उ.मा.वि. सागर में अध्यापनरत।

कविता कर्म – सन् 1975 से प्रारंभ/ आरम्भकाल में छन्दोबद्ध रचनाएँ लिखी। सन 1981 से अनवरत संवेदनशील लेखन, चिंतन एवं अभिव्यंजना/ मार्क्सवाद से प्रभावित काव्यकर्म में रत अनेक पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

रूचि एवं सृजन – काव्य, निबन्ध लेखन, कवि सम्मेलनों तथा आकाशवाणी में काव्यपाठ, नाट्य में अभिरूचि, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं में सम्भाषण/ इत्यादि, अंतः विभीषिका, दरअसल, निगदितम् काकोलूकीयम्, आर्तनाद, जनरल प्रमोशन, गद्य, पद्य एवं नाट्य संकलन, संस्कृत बुन्देली शब्दकोष, त्रिभाषायी व्याकरण प्रकाशनाधीन।

पसंदीदा रचनाकार – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई, डॉ नामवरसिंह निराला, मुक्तिबोध, नागार्जुन, त्रिलोचन, धूमिल, अरूणकमल एवं समकालीन प्रगतिशील लेखक ।

सम्प्रति – 1 टीचर्स क्वार्टर्स, एम.एल.बी स्कूल कैम्पस गोपालगंज सागर (म.प्र.) मोबाइल नम्बर – 9424405067

निगदितम्

निबन्ध संग्रह

टी. आर. त्रिपाठी 'रुद्र'

ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन

दिल्ली - 110031 (भारत)

प्रकाशक

ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन

(प्रकाशक एवं वितरक)

5-42, एकता अपार्टमेंट, गीता कालोनी, दिल्ली-110031 (भारत)

दूरभाष-011-22453953, 22419169, 9899071610

ई-मेल : rkgpost@gmail.com

वेबसाईट : www.indianacademicpublisher.com

निगदितम्: निबन्ध संग्रह

© टी. आर. त्रिपाठी 'रुद्र'

आई एस बी एन : 978-93-80570-05-1

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रानिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकापी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

मूल्य	:	290.00
प्रथम संस्करण	:	2010
शब्दांकन	:	अनुज प्रिन्टर्स, दिल्ली
मुद्रक	:	एच. एस. प्रिंटर्स, नई दिल्ली–110032

पूर्वपीठिका

अमरकोष से "यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते" इति निगदेनैव व्याख्यातम् "नि +गद् +क्त" से निगदितम् की निष्पत्ति साध्य है जिसका सार है कि जो कुछ सीखा हुआ है उसे उल्लेख के माध्यम से व्यक्त किया जा रहा है।

निगदितम् मेरे गद्य – प्रवेश की प्रथम पुस्तक है। अनेक पुस्तकें पढ़कर उनकी मीमांसा करना, हास्य–व्यंग्य निबंध लिखना, कहानी, नाटक और गद्य काव्य लिखना मेरी साहित्यिक प्रवृत्तियों और अभिरुचियों में सम्मिलित है। इस संकलन में मेरे 37 ललित निबंध और पुस्तक–समीक्षायें सम्मिलित हैं, जो इस विश्वास के साथ संकलन में प्रस्तुत हैं कि नौजवान साथी इससे लेखन की प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

पुस्तक की समीक्षा तो होगी ही किन्तु पुस्तक के बारे में जो विचार बिन्दु व आशीर्वचन मान प्रो. श्री कान्तिकुमार जैन ने दिए हैं, उनके प्रति मैं सादर अनन्य कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इस प्रकाशन में मेरे अनन्य शिष्य अक्षय जैन के परिश्रम और अमूल्य समय की संस्तुति न करना बेमानी होगा। मेरे कलामित्र श्री दिनेश श्रीवास्तव ने मुख पृष्ठ का आकल्पन करके पुस्तक को रंगों से रूपायित किया है, उनका यह श्लाघनीय उद्यम अवश्य ही पुस्तक के आकर्षण में गुणात्मक वृद्धि करेगा। ऐसी मेरी मान्यता है।

शिक्षक दिवस 2007

भवदीय

टी.आर त्रिपाठी 'रुद्र'

विषयानुक्रम

	भूमिका / आशीर्वचन	*v*
	पूर्वपीठिका	*viii*
1.	बसंत पंचमी	1
2.	लटके हुये लोग	6
3.	मैं तुलसीदास नहीं हूँ	9
4.	समता और स्त्री विमर्श	12
5.	भारतीय लोकतंत्र का पहला पाठ	19
6.	शिक्षा और इक्कीसवीं सदी का भारत	23
7.	आधुनिक साहित्य का समाज शास्त्र	26
8.	उपन्यास समीक्षा – "मोए लै चल बलम रेता में"	30
9.	प्रलेसं का स्थापना दिवस बनाम साहित्य दिवस	34
10.	वार्षिक परीक्षा का औचित्य	38
11.	संसाधनों के अभाव में ग्रस्त हाईस्कूल परीक्षा	40
12.	शीर्षाकम्पन कला और संस्कृति	43
13.	कुछ भी चलेगा लोकगीत के नाम पर	46
14.	साहित्याकाश में चन्द्रोदय : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	48
15.	"गीत वही लिख पाता है" काव्य संग्रह समीक्षा	57
16.	नारी मुक्ति : उषा की किरण	60
17.	साहित्य और सामाजिक परिवर्तन	62
18.	मायूस सागरी : व्यक्तित्व और कृतित्व	64
19.	कथा संग्रह समीक्षा – "निर्वासन"	66
20.	उपन्यास "मैं तो ऊँसई अतर में भींजी: एक समीक्षक दृष्टि	70
21.	मध्यप्रदेश में सहकारी आन्दोलन	80
22.	वर्ग विभेदन की राजनीति से जूझता मानव	84

23. बड़ौ बाजीगर है बसंत (बुन्देली रूपान्तर) 86
24. रीतिकाल का पुनरागमन 91
25. शिक्षा की दुर्दशा : एक शर्मनाक कृत्य 94
26. राष्ट्रीय और सामाजिक विकास में युवाओं का योगदान 100
27. किशोर वय और समकालीन समाज 104
28. संस्कृत और संस्कृति 111
29. शब्द की मर्यादा और सत्ता 114
30. काव्य संग्रह 'उनकी आवाज'–एक मूल्यांकन 117
31. आम आदमी के कवि थे मुक्तिबोध 125
32. साहित्य सृजन : संदर्भ कैरियर गाइडेन्स 128
33. उपन्यास समीक्षा–''तेंदू के पत्ता में देवता'' 132
34. प्रेम और पसीना के कवि निर्मल जी 135
35. पर्यावरण संरक्षण में झीलों और जलाशयों का योगदान 137
36. संवेदनशील कवि डॉ. बी.पी. दुबे 141
37. मादक पदार्थ और उनके दुष्प्रभाव 145
38. सभी दरवाजे खिड़कियाँ खोल दें 152
39. देखे–सुने का सुख 159
40. सुनहरी होली 163
41. ज्ञान और संवेदना का समन्वय–काव्य संग्रह समीक्षा 166

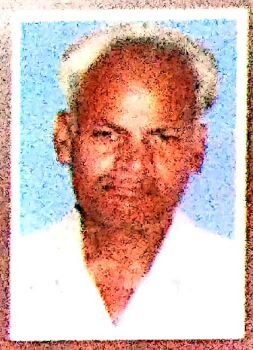

टी.आर. त्रिपाठी "रूद्र"

अमरकोष से "यदधीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते" इति निगदेनैव व्याख्यातम् "नि+गद्+क्त" से निगदितम् की निष्पत्ति साध्य है जिसका सार है कि जो कुछ सीखा हुआ है उसे उल्लेख के माध्यम से व्यक्त किया जा रहा है।

निगदितम् मेरे गद्य - प्रवेश की प्रथम पुस्तक है। अनेक पुस्तकें पढ़कर उनकी मीमांसा करना, हास्य-व्यंग्य निबंध लिखना, कहानी, नाटक और गद्य काव्य लिखना मेरी साहित्यिक प्रवृत्तियों और अभिरुचियों में सम्मिलित है। इस संकलन में मेरे 41 ललित निबंध और पुस्तक-समीक्षायें सम्मिलित हैं, जो इस विश्वास के साथ संकलन में प्रस्तुत हैं कि नौजवान साथी इससे लेखन की प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

GBO

Rs. 290/-

ISBN : 978-93-80570-05-1

9 789380 570051

ग्लोबल बुक्स ऑर्गनाइजेशन
(प्रकाशक एवं वितरक)
42, एकता अपार्टमेंट, गीता कालोनी, दिल्ली-110031 (भारत)
दूरभाष-011-22469169, 22445526, 9899071610
ई-मेल : rkgpost@gmail.com